ISMAIL NATIONAL MAHILA PG COLLEGE, MEERUT

(Affiliated with C.C.S University, Meerut, formerly Meerut University)

NAAC Accredited A Grade College

Summary Sheet-

Criteria	Criteria 03- Research, Innovations and Extension
Key Indicator	3.3-Research Publication and Awards
Metric	3.3.3. Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/international conference proceedings per teacher during the year
Response	

Dr Huma Masood

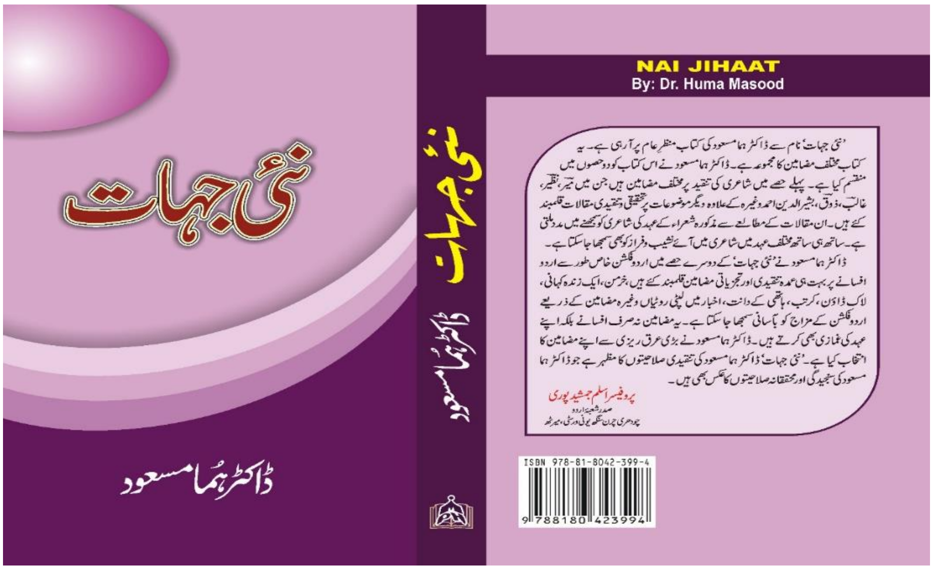

اردو نثر کے ارتقاء میں
مولوی بشیر الدین احمد کا حصّہ

ڈاکٹر ہما مسعود

اردو نثر کے ارتقاء میں
مولوی بشیر الدین احمد کا حصّہ

ڈاکٹر ہما مسعود

Urdu Nasr Ke Irteqa Mein
Maulvi Basheeruddin Ahmad Ka Hissa
By: Dr. Huma Masood

تعارف

نام : ڈاکٹر ہما مسعود
والد : مسعود احمد (مرحوم)
والدہ : والاشان
تعلیم : • ایم اے-اردو، چودھری چرن سنگھ یونی ورسٹی، میرٹھ
• پی ایچ ڈی، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی
ملازمت : قائم مقام پرنسپل، اسمٰعیل نیشنل مہیلا پی جی کالج، میرٹھ
پتہ : ۱۹ اودلی بازار، میرٹھ

ISBN 978-81-8042-395-6

MODERN PUBLISHING HOUSE
9, Gola Market, Darya Ganj, New Delhi-110002
Phone: 011-23278869, Mobile : 9312566664
E-mail: vijaybooks@yahoo.com

Dr Deepti Kaushik

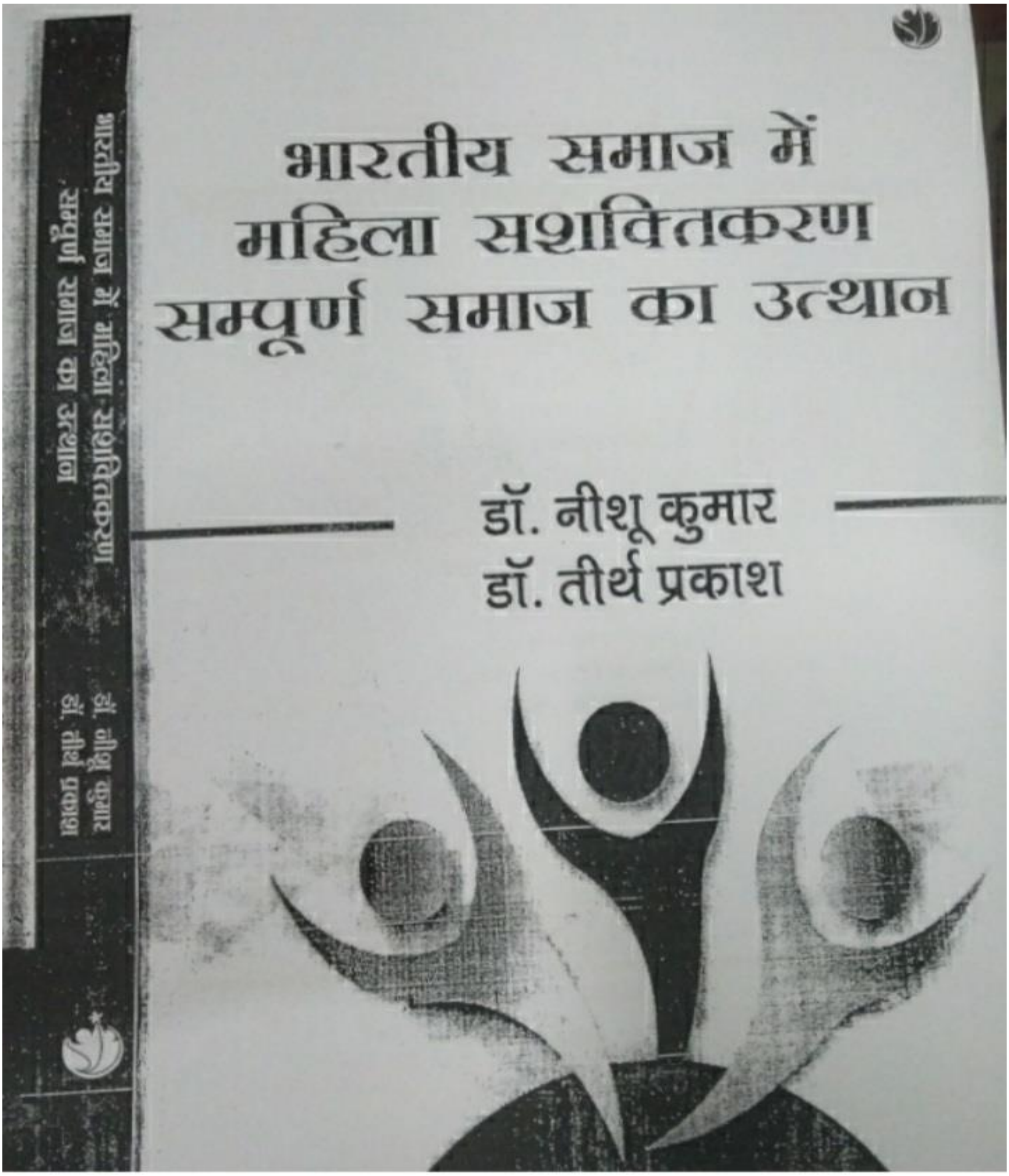

ISBN : 978-93-91018-06-1

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
: +9315194807, 9968082809
E-mail: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021

अक्षर संयोजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-110094

मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-110032

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने हैं।

Bhartye Samaj Me Mahila Sashktikaran Sampurn Samaj ka Utthan

by Dr. Nishu Kumar
Dr. Tirth Parkash

17.

21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण : भारतीय संदर्भ में

डॉ. दीप्ती कौशिक*

विशाल कुमार लोधी**

कोई भी समाज तब तक विकास नहीं कर सकता, जब तक देश की आधी आबादी अपना पूर्ण सहयोग प्रदान न करे। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि शिक्षित और सुसंस्कृत स्त्री शक्ति से देश का भाग्य बदला जा सकता है। स्त्री-पुरुष दोनों ही मिलकर समाज और संसार की संरचना करते हैं। किसी एक की अनुपस्थिति से सृष्टि की न तो रचना संभव है, न ही समाज का निर्माण। भारतीय समाज और साहित्य दोनों ही में उनका महत्व स्वीकार किया गया है। एक के बिना दूसरे की पृथक सत्ता नहीं हो सकती, इसीलिए हमारे धर्म में स्त्रियों को पुरुषों के समतुल्य स्थान दिया गया है और उसके बिना कोई भी धार्मिक कार्य पूर्ण नहीं माना जाता है।[1]

मानव सृष्टि में नारी का आविर्भाव बहुत प्राचीन है। मनुष्य समाज में नारी शक्ति को आदिशक्ति कहा जा सकता है। यही वह शक्ति है जो जीव लोक में प्राण को वहन करती है और इसका पोषण करती है। पृथ्वी को जीवों के रहने योग्य बनाने के लिए प्रकृति को ढलाई-पिटाई करते अनेक युग बीत चुके थे। यह काम अभी आधा ही हुआ होगा कि प्रकृति ने जीवों की सृष्टि करना आरम्भ कर दिया और धरती पर वेदना उतर आयी। प्रकृति ने प्राण साधना की वेदना की वही आदिम वृत्ति नारी के रक्त और हृदय में भर दी है। उसने जीव के पालन के समूचे

1. चौधरी कृष्ण चन्द्र (2018), महिला सशक्तिकरण संपूर्ण पहलू प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ.सं.-01

*एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, आई.एन. (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ।

**शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, आई.एन. (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ।

9. महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता में चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ (हरिद्वार जनपद के विशेष सन्दर्भ में) 58
सरिता
डॉ. [illegible]

10. कुमाऊँ की मातृशक्ति और भारतीय स्वाधीनता संग्राम : एक विश्लेषण 67
रवि कुमार जोशी

11. महिला सुरक्षा और साइबर अपराध का विश्लेषणात्मक अध्ययन 76
रितु

12. भारतीय समाज में महिलाओं की परिस्थिति 84
डॉ. रेनू राणा

13. पंचायतीराज एवं महिला सशक्तिकरण : एक विश्लेषण 93
डॉ. सीमा राठौर

14. सृष्टि में नारी और प्रकृति का महत्व 98
[illegible] गुप्ता

15. इक्कीसवीं सदी में भारतीय कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ एवं समाधान 104
शिल्पा कुमारी

16. महिला सशक्तिकरण में सोशल मीडिया की भूमिका 111
विपिन कुमार
अभिलाष भट्ट

17. 21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण : भारतीय संदर्भ में 118
डॉ. दीप्ति कौशिक
विशाल कुमार जोशी

18. महिला सशक्तिकरण : शिक्षा से परिवर्तित होता दृश्य 124
कविता शर्मा

19. महिला सशक्तिकरण एवं महिला स्वास्थ्य 130
डॉ. कृष्णा रावत

20. भारत में महिला सशक्तिकरण की बदलती तस्वीर 134
डॉ. [illegible]

21. प्राचीन बौद्ध साहित्य में पारिवारिक जीवन एवं स्त्रियों की दशा 142
डॉ. प्रशान्त कुमार
नीरज सिंह

22. भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण : एक अवलोकन 147
डॉ. नीरज चौधरी

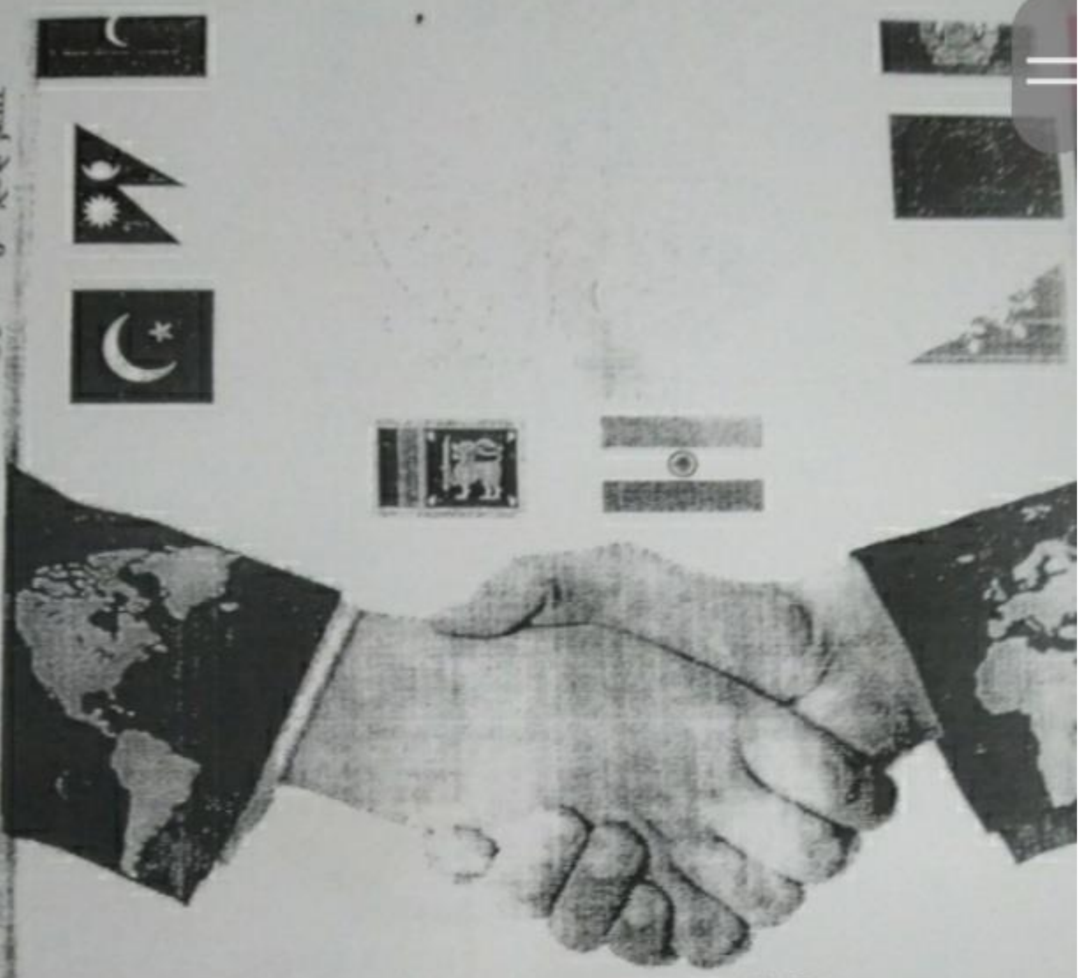

सार्क देशों की राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संस्कृति में भारत का योगदान

डॉ. वीरेंद्र सिंह
डॉ. तीर्थ प्रकाश

सार्क देशों की राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संस्कृति में भारत का योगदान
डॉ. वीरेंद्र सिंह
डॉ. तीर्थ प्रकाश

ISBN : 978-93-91018-04-7

© सम्पादक

प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

: +9315194807, 9968082809

: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021

अक्षर सयोंजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक

ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुर्नप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुर्नत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने है।

Saarc Deshon Ki Raajnitik Aarthik Evam Samajik Sanskriti Mein Bharat Ka Yoagdaan

by Dr. Virendar Singh

Dr. Tirth Parkash

8. प्राचीन भारत-नेपाल के मध्य राजनीतिक सम्बन्ध: एक तुलनात्मक अध्ययन 50
डॉ. [illegible] कुमार [illegible]
9. 21वीं शताब्दी में भारत-रूस के व्यापार, आर्थिक एवं राजनीतिक संबंध : एक अवलोकन 56
डॉ. [illegible]
[illegible] कुमार [illegible]
10. श्रीलंका में चीन का हस्तक्षेप एवं प्रभाव : भारतीय सुरक्षा के संदर्भ में 64
डॉ. [illegible] शर्मा
प्रो. [illegible]
11. आतंकवाद : संकल्पना एवं प्रकृति 70
डॉ. [illegible]
12. दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एवं विकास में भारत की भूमिका 80
डॉ. [illegible] सिंह
डॉ. [illegible] कुमार
13. भारत-अफगानिस्तान सम्बन्ध का विश्लेषणात्मक अध्ययन 85
डॉ. [illegible]
14. 9/11 के पश्चात दक्षिण एशिया के संदर्भ में अमेरिकी विदेश नीति का अध्ययन 91
[illegible] कुमार
डॉ. [illegible] सिंह
15. चीन-पाक आर्थिक गलियारे का भारत की सुरक्षा पर प्रभाव 94
[illegible] कुमार
16. श्रीलंका में नृजातीय संघर्ष एवं भारत-श्रीलंका संबंध 102
[illegible] सिंह
डॉ. [illegible]
[illegible]
17. भारत-श्रीलंका सम्बन्धों में तमिल समस्या 110
[illegible] दुबे
18. भारत एक महाशक्ति के रूप में क्षेत्रिय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 114
[illegible] कुमार
डॉ. [illegible] देवी
19. भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में [illegible] एवं आतंक 124
[illegible] देवी
20. प्रधानमंत्री [illegible] मोदी की विदेश नीति का मूल्यांकन: एक [illegible] के रूप में 129
डॉ. [illegible]
21. China's Belt Road Initiative: Implication for India 147
Prema Kainthola

9.

21वी शताब्दी में भारत-रूस के रक्षा, आंतरिक एवं राजनैतिक संबंध : एक अवलोकन

डॉ. दिप्ती कौशिक*

विशाल कुमार लोधी**

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद सोवियत संघ विश्व का सबसे बड़ा साम्यवादी देश बना, यहाँ के लेखकों ने साम्यवादी विचारधारा को विश्व भर में फैलाया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सोवियत संघ एक प्रमुख सामरिक और राजनीतिक शक्ति बनकर उभरा। संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ इसकी वर्षों तक प्रतिस्पर्धा चली जिसमें सामरिक, आर्थिक, राजनैतिक और तकनीकी क्षेत्रों में एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ थी। 1960 के दशक से यह आर्थिक रूप से क्षीण होता चला गया और 1991 में इसका विघटन हो गया जिसके फलस्वरूप रूस, सोवियत संघ का सबसे बड़ा राज्य बना।

आधुनिक रूसी लोगों को स्लाव मूल के इतिहास से जोड़ा जाता है, जो उत्तर और पश्चिम की तरफ से आए थे। हालाँकि इससे पहले यवनों (हेलेनिक) तथा खज़र तुर्कों का साम्राजय दक्षिणी रूस में रहा था। यद्यपि आज रूस में कई मूल के लोग रहते हैं-रूसी, खजर, तातर, पोल, कज़ाख, कोस्साक-रूसी मूल के लोगों का इतिहास पूर्वी स्लावों के समय से आरम्भ होता है। तीसरी से आठवीं सदी तक स्लाव साम्राजय अपने चरम पर था। कीव में स्थापित उनका साम्राज्य ही आज के रूसी लोगों का परवर्ती माना जाता है। कीवी रूसों ने 10वीं सदी में ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिया। तेरहवीं सदी में मंगोलों के आक्रमण के कारण किवि रूसों का साम्राज्य छिन्न-भिन्न

*एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, आई.एन. (पी.जी.) कॉलिज, मेरठ (उत्तर-प्रदेश)।

**शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, आई.एन. (पी.जी.) कॉलिज, मेरठ (उत्तर-प्रदेश)।

Dr Deepa Tyagi

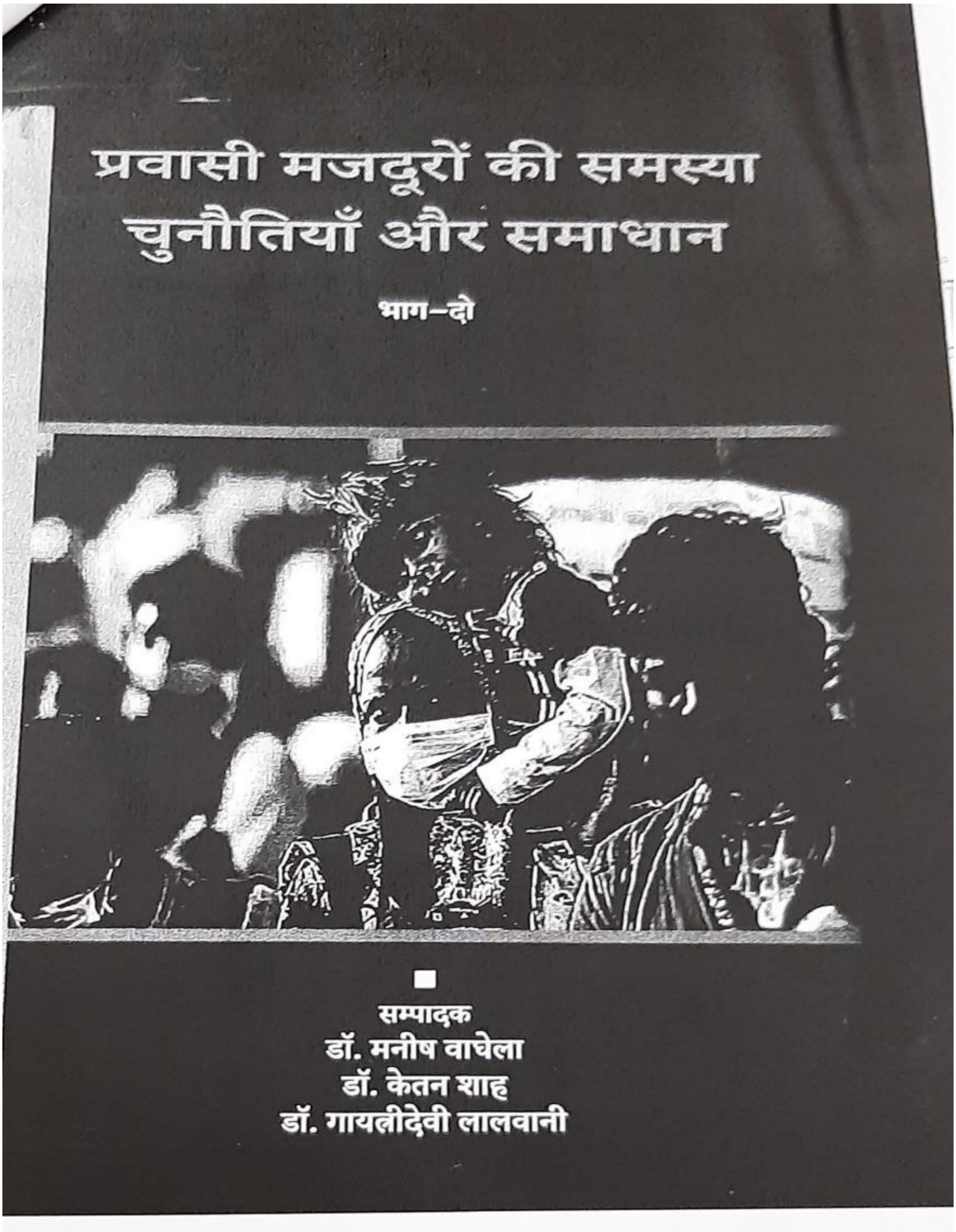

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक अथवा सम्पादक/सम्पादकों इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN 978-93-89341-87-4

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-22825424, 7291920186, 09350809192
www : anuugyabooks.com

मूल्य : 900 रुपये

आवरण
असरार 'सागरी'

PRAVASI MAZDOORON KI SAMASYAYA, CHUNOWTIYAN AVAM SAMADHAN (Vol-2) *edited by* Dr. Manish Vaghela, Dr. Ketan Shah & Dr. Gayatridevi Lalwani

14. प्रवासी मजदूरों की समस्यायें और समाधान - हिन्दी काव्यधारा से होते हुए	– डॉ. गायत्रीदेवी जे. लालवानी	86
15. समकालीन कविता के केन्द्र में मजदूर	– डॉ. पुष्पा देवी	94
16. समकालीन कविता के केन्द्र में मज़दूर	– डॉ. प्रिया ए.	103
17. समकालीन कविता के केन्द्र में मजदूर	– पूनम कुमारी	109
18. प्रगतिवादी काव्यधारा में श्रमिकों का हृदयद्रावक चित्रण	– डॉ. अर्पिता अग्रवाल	116
19. प्रगतिवादी काव्यधारा में श्रमिकों का हृदयद्रावक चित्रण	– डॉ. सलीम बाणदार	123
20. हिन्दी मंचीय कविता में ग्रामीण निर्धनता	– डॉ. अनिरुद्ध कुमार अवस्थी	127
21. मार्क्सवादी दर्शन और हिन्दी कविता	– डॉ. रमेश प्रसाद	137
22. साहित्यकार नागार्जुन की श्रमिक-चेतना एवं वर्तमान सन्दर्भों में प्रासंगिकता	– डॉ. दीपा त्यागी	143
23. नागार्जुन की कविताओं में श्रमिक-वर्ग का मार्मिक वर्णन	– डॉ. हिरजीभाई सींच	149
24. अरुण कमल की कविताओं में मजदूरों का चित्रण	– डॉ. ज्योत्सना गोस्वामी	152
25. बाबा नागार्जुन की कविता में मजदूरों का जीवन-चित्रण	– डॉ. एस. सूर्यावती	160
26. मुक्तिबोध की कविता और सर्वहारा वर्ग	– अभीप्सा पटेल	165
27. धूमिल के काव्य में ग्राम्य संस्कृति और किसानों की दुर्दशा का चित्रण	– दिवाकर सिंह राठौर	169
28. प्रगतिवादी काव्यधारा में श्रमिकों का हृदय-विदारक चित्रण	– आरती सिंह राठौर	176
29. मार्क्सवादी दर्शन और हिन्दी प्रगतिवादी कविता	– कु. कंचन	182
30. प्रगतिवादी काव्यधारा में श्रमिकों का हृदयद्रावक चित्रण	– निधी कुमारी	187
31. समकालीन कविता के केन्द्र में मजदूर	– रबारी हंसा ममुभाई	194
32. प्रगतिवादी काव्य में श्रमिकों की अन्तर्वेदना	– सुरेश कुमार प्रजापति	198

खंड-3 : हिन्दी कहानियों में मजदूरों का चित्रण / 205

33. हिन्दी कहानी में मजदूरों का संवेदनात्मक चित्रण	– डॉ. अरुणा चौधरी	207

साहित्यकार नागार्जुन की श्रमिक-चेतना एवं वर्तमान सन्दर्भों में प्रासंगिकता

डॉ. दीपा त्यागी

समाज को अपने कर्म का अर्घ्य देकर पल्लवित-पुष्पित करने वाला, स्वेद एवं रक्त से धरा को सिंचित करने वाला वर्ग वर्तमान समय में पीड़ा एवं सन्त्रास का जीवन व्यतीत कर रहा है, यद्यपि श्रमजीवी की यह व्यथा-कथा नयी नहीं है, न जाने कब से शोषण की भट्ठी में तपते हुए अपना जीवन व्यतीत करता आ रहा है। समाज का मुट्ठी-भर वर्ग ही ऐसा है जो उसकी हृदय-विदारक पीड़ा को आत्मसात् करते हुए सहयोग का हाथ बढ़ाता है तथा उसकी दबी-कुचली वाणी को स्वर प्रदान करने का प्रयास करता है। श्रमिकों के पक्षधर साहित्यकार नागार्जुन एक ऐसे संवेदनशील व्यक्ति थे जिन्हें सर्वहारा की पीड़ा उद्वेलित कर जाती थी, जिसकी प्रतिक्रिया-स्वरूप सुख-सुविधाओं से वंचित करने वालों के लिए वे वज्र से भी कठोर होकर कलम से तीक्ष्ण प्रहार करते थे। "देश की साधारण जनता से कवि का लगाव जितना गहरा और आत्मीय होगा, कविता के वर्ण और आस्वाद में उतनी विविधता होगी, कवि की संवेदना उतनी ही सघन होगी, कविता का यथार्थवाद उतना ही गम्भीर होगा और काव्य की जीवन-शक्ति उतनी ही दुर्दम होगी।"[1] नागा बाबा को वंचितों पीड़ितों की आवाज बुलन्द करने का साहस उनकी परिस्थिति ने दिया। दरिद्र परिवार में जन्म लेने वाला वैद्यनाथ मिश्र ही अपने जैसों के विडम्बनापूर्ण जीवन का यथार्थ चित्रण करने में समर्थ हो सका, अपनों के दर्द को आत्मसात् करते-करते नागार्जुन, नागा बाबा, जनवादी न जाने कितने नामों से विख्यात हो गया। उन्हें यह कहने में कभी संकोच नहीं हुआ कि दरिद्र देश में धनिक ऐसे लगते हैं जैसे "कोढ़ी कुढब तन पर मणिमय आभूषण।"[2]

जनवादी बाबा का साहित्य-संसार विविधमुखी है, उसमें मानव भी हैं, प्राकृतिक सौन्दर्य भी और मानवेतर प्राणी भी, पर उन्होंने विहग, सुमन से बढ़कर महत्त्व मानव को दिया और किसी विशिष्ट को नहीं अपितु साधारण जन जो अथक् परिश्रम करने के पश्चात् बड़ी कठिनाई से जीवन-निर्वाह करने का प्रयास करता है। ऊँची अट्टालिकाओं में

Dr Parul Tyagi

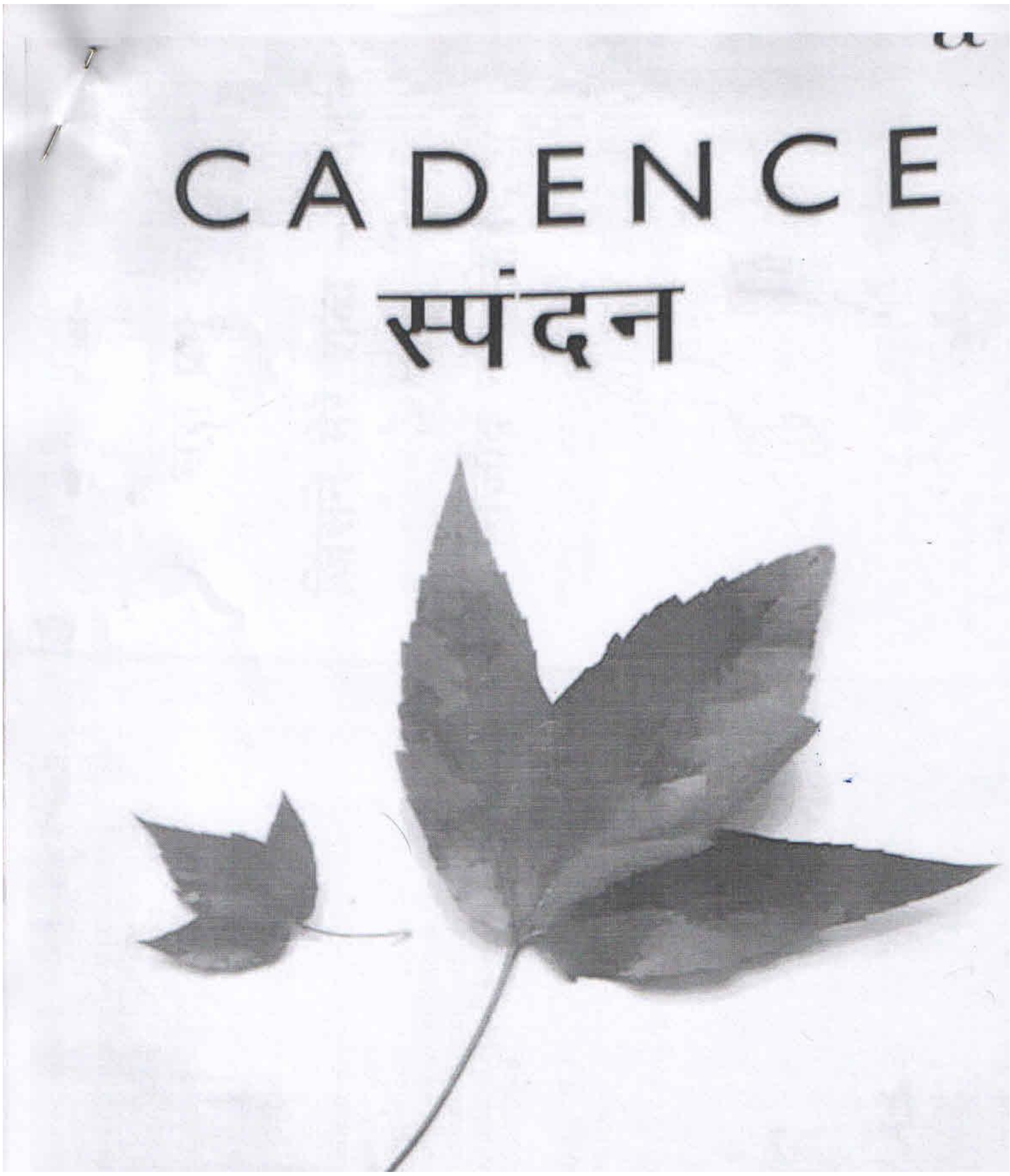

Published by
Author"s Ink Publications
Info@authorsinkindia.com
authorsinkindia@gmail.com
Facebook: www.facebook.com/authorsinkindia
Twitter: www.twitter.com/authorsinkindia
Our Blog: authorsinkindia.com/blog
Contact: +91-8950970646

ISBN: 978-93-90006-27-4
Copyright © Parul Tyagi

Parul Tyagi asserts the moral right to be identified as the author of this work.

Typeset by Nikhil Mahajan in 11 pts Garamond.
Printed and bound in India.

All rights reserved. No part of the material protected by the copyright notice may be produced or utilized in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or by any information storage and retrieval system, without written permission from the copyright holder.

उस प्रभु को....

जिसने मेरे शब्द - स्पंदन
को
निर्जीव न होने दिया

About the Author

Dr. Parul Tyagi is an Associate Professor & Head in the Department of English, Ismail National Mahila P.G. College, Meerut. She has been teaching Graduate & Postgraduate classes for more than twenty years and is actively engaged in guiding research scholars.

She has presented a good number of research papers in national and international seminars and has been published in journals and books of repute. She has authored one poetry collection "बस यूँ ही". Cadence/स्पंदन, a poetry collection, is her second book.

COVER DESIGNER
NIKHIL MAHAJAN

www.authorsinkindia.com
fb.com/authorsinkindia
twitter.com/authorsinkindia
authorsinkindia.com/blog

ISBN: 978-93-90006-27-4
9 781234 567897

राधेश
डॉ० पारुल त्यागी

डॉ० पारुल त्यागी

डॉ० पारुल त्यागी वर्तमान में इस्माईल नेशनल पी०जी० कॉलिज, मेरठ में 20 वर्षों से अध्यापन कार्य कर रही हैं। आप महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में ऐसोसियेट प्रोफेसर हैं। आपने चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से एम०ए०, एम०फिल० व पी०एच०डी० उपाधि प्राप्त की है। आपके निर्देशन में दस शोधार्थी शोध उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। आपके करीब 23 शोध–पत्र विभिन्न शोध पत्रिकाओं, किताबों में प्रकाशित हो चुके हैं। आपने अनेकों राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों, कार्यशालाओं में शोध–पत्र प्रस्तुत किये हैं। आपने सेमिनारों में वक्ता के रूप में भी सहभागिता की है।

प्रस्तुत कविता संकलन मन के वे उदगार हैं जो बनाये नहीं गये। बर बस ही दिमाग में कौंधे : कुछ देखकर, कुछ सुनकर, कुछ पढ़कर और कुछ अनुभव कर कर।

आपकी दो पुस्तकें ' बस यूँ ही और Cadence (स्पंदन) प्रकाशित हो चुकी हैं ।

मानसी प्रकाशन

56 बी/२,कैलाशपुरी

मेरठ- 250002

ISBN- 81-85494-51-7

Dr Vineta

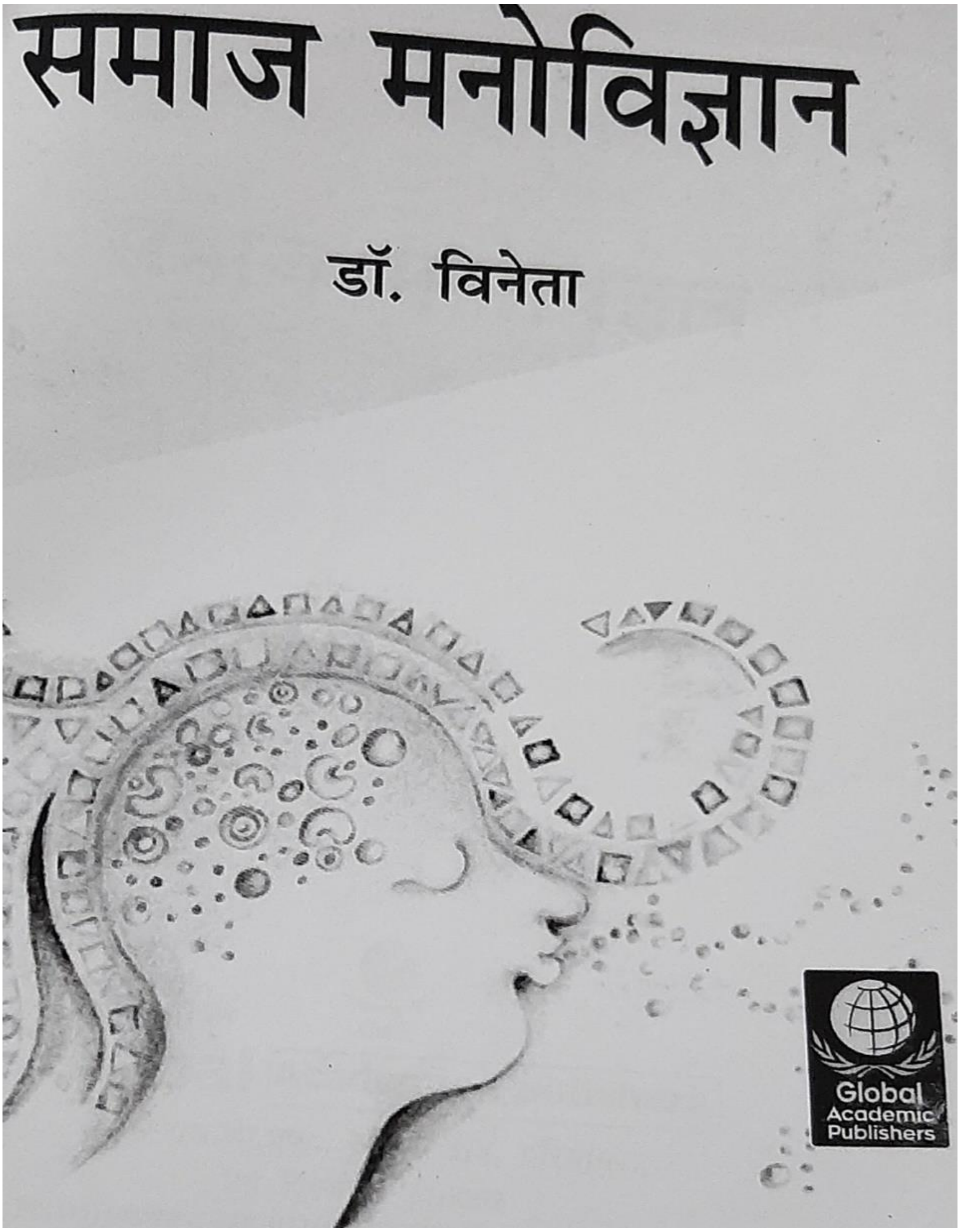

मनोविज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वालों में डॉ. विनेता का नाम भी सम्मान से लिया जाता है। वर्तमान में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले मेरठ के इस्माईल नेशनल महाविद्यालय में प्रवक्ता के रूप में कार्यरत हैं। डॉ. विनेता को अपने क्षेत्र में लंबा अनुभव है।

डॉ. विनेता प्रतिभावान तथा बहुमुखी गुणों वाली प्रवक्ता है। इन्होंने एम.एम., एम.फिल., पी.एच.डी. की उपाधि चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय से प्राप्त की है। इन्होंने नैदानिक मनोविज्ञान में विशेषज्ञता प्राप्त की है। इनके द्वारा शोधित पत्र अनेक प्रसिद्ध जनरलों तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। इन्होंने अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों में भाग लिया है। इनके द्वारा विद्यार्थियों को समय-समय पर मार्गदर्शन एवं परामर्श भी किया जाता है।

₹ 700/-
ISBN 978-93-89009-23-1

Global Academic Publishers
7/26, Lower Ground Floor, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi - 110002 (India)
Ph. (M) 9999911249 (O) 011-42564726, 43551324, 47090343

प्रकाशक

GAP

Global Academic Publishers

7/26, एल.जी.एफ., अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली - 110002

Ph. (M) 9999911249, 011-42564726, 43551324, 47090343

© 2020 सर्वाधिकार सुरक्षित

अ.मा.पु.सं. 978-93-89009-23-1

भारत में प्रकाशित 2020

इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति के प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके - इलैक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वैब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशित एवं वितरित नहीं किया जा सकता है। प्रकाशक ने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए प्रकाशक, सम्पादक, लेखक अथवा मुद्रक जिम्मेदार नहीं है।

सभी प्रतिवाद का न्यायिक क्षेत्र 'दिल्ली' होगा।

Printed by:
एशियन ऑफसेट प्रिन्टर्स, दिल्ली

Laser Typesetting by:
ग्लोबल डी.टी.पी. यूनिट, दिल्ली

शिक्षा मनोविज्ञान

डॉ. विनेता

GAP

Global Academic Publishers

7/26, एल.जी.एफ., अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली - 110002

Ph. (M) 9999911249, 011-42564726, 43551324, 47090343

प्रकाशक

GAP

Global Academic Publishers

7/26, एल.जी.एफ., अंसारी रोड, दरियागंज,

नई दिल्ली - 110002

Ph. (M) 9999911249, 011-42564726, 43551324, 47090343

© 2020 सर्वाधिकार सुरक्षित

अ.मा.पु.सं. 978-93-89009-24-8

भारत में प्रकाशित 2020

इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति के प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके - इलैक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वैब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के विना प्रकाशित एवं वितरित नहीं किया जा सकता है। प्रकाशक ने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए प्रकाशक, सम्पादक, लेखक अथवा मुद्रक जिम्मेदार नहीं है।

सभी प्रतिवाद का न्यायिक क्षेत्र 'दिल्ली' होगा।

Printed by:

एशियन ऑफसेट प्रिन्टर्स, दिल्ली

Laser Typesetting by:

ग्लोबल डी.टी.पी. यूनिट, दिल्ली

मनोविज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वालों में डॉ. विनेता का नाम भी सम्मान से लिया जाता है। वर्तमान में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले मेरठ के इस्माईल नेशनल महाविद्यालय में प्रवक्ता के रूप में कार्यरत हैं। डॉ. विनेता को अपने क्षेत्र में लंबा अनुभव है।

डॉ. विनेता प्रतिभावान तथा बहुमुखी गुणों वाली प्रवक्ता है। इन्होंने एम.एम., एम.फिल., पी.एच.डी. की उपाधि चौ. चरण सिंह *विश्वविद्यालय से प्राप्त की है। इन्होंने नैदानिक मनोविज्ञान में विशेषज्ञता प्राप्त की है। इनके* द्वारा शोधित पत्र अनेक प्रसिद्ध जनरलों तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। इन्होंने अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों में भाग लिया है। इनके द्वारा विद्यार्थियों को समय-समय पर मार्गदर्शन एवं परामर्श भी किया जाता है।

₹ 700/-

ISBN 978-93-89009-24-8

9 789389 009248

Global Academic Publishers
7/26, Lower Ground Floor, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi - 110002 (India)
Ph. (M) 9999911249 (O) 011-42564726, 43551324, 47090343

Mrs Aanchal

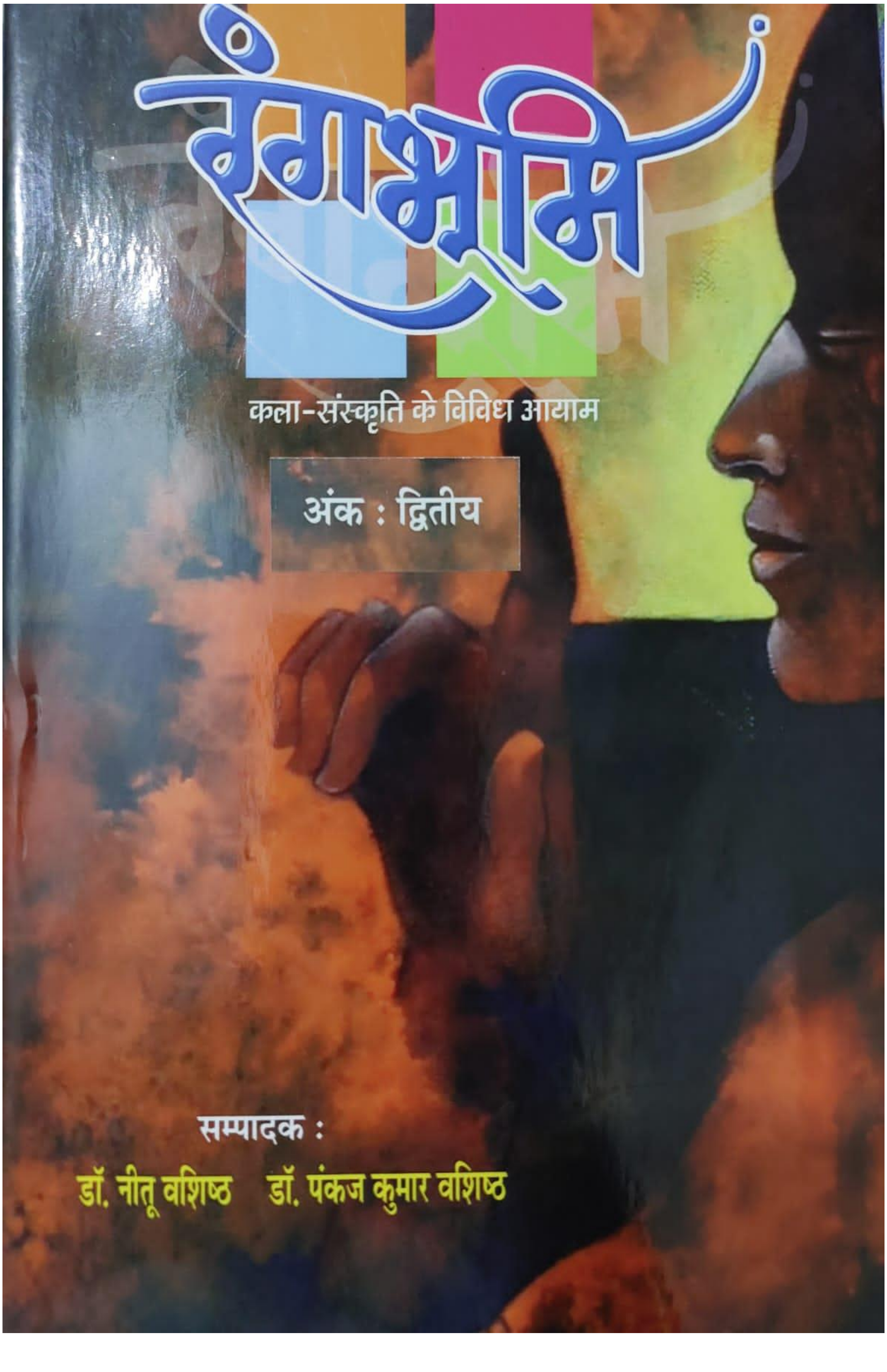
रंगभूमि
कला-संस्कृति के विविध आयाम
अंक : द्वितीय
सम्पादक :
डॉ. नीतू वशिष्ठ डॉ. पंकज कुमार वशिष्ठ

सम्पादक मण्डल

डॉ. नीतू वशिष्ठ
प्रधान सम्पादक

डॉ. पंकज कुमार वशिष्ठ
प्रधान सम्पादक

डॉ. रूचिन शर्मा
उप-सम्पादक

डॉ. विनोद सिंह
सह-सम्पादक

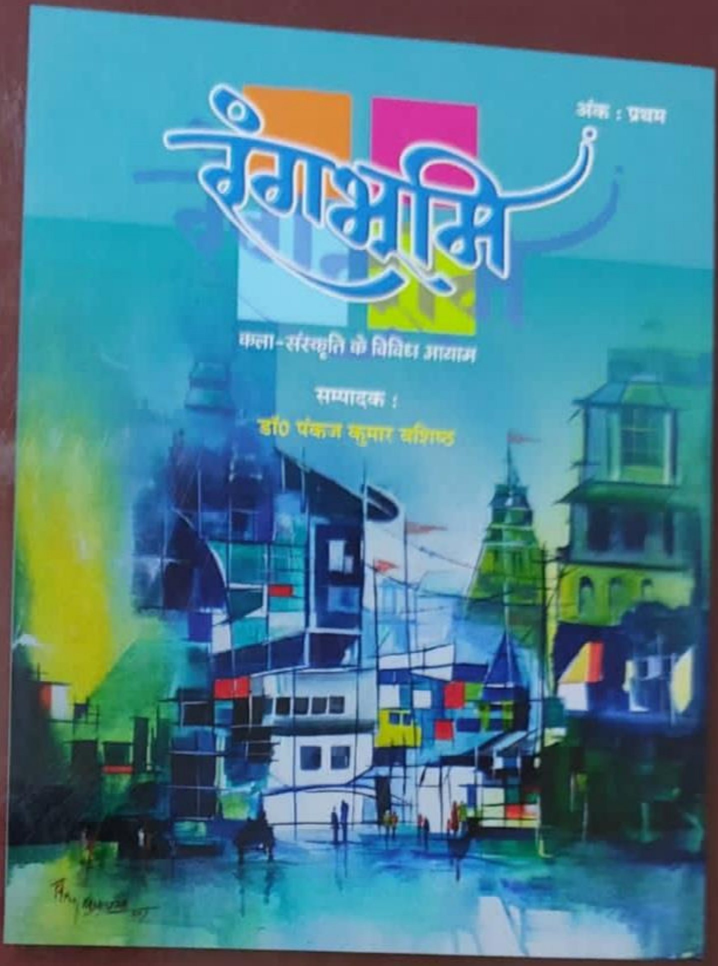

मूल्य : ₹ 1100.00
ISBN: 978-93-89043-60-0

सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
एन-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
चलभाष : +91-7042082850, 9899665801
ई-मेल : satyampub_2006@yahoo.com

ISBN : 978-93-89043-60-0

© सुरक्षित

प्रथम संस्करण : 2020

इस पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों, लेखों में व्यक्त विचार एवं तथ्य लेखकों के हैं, उससे प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है और उसके लिए प्रकाशक या सम्पादक किसी भी रूप में ज़िम्मेदार नहीं है।

लेखक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक :

आर० डी० पाण्डेय

सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस

N-3/25, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059

फोन : +91-7042082850

मूल्य : 1100.00

टाईप सेटिंग : **एस० के० ग्राफिक्स**, दिल्ली-84

मुद्रक : **विशाल कौशिक प्रिन्टर्स**, दिल्ली-93

10. "भारतीय चित्रकला के बदलते आयाम -प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक कला समीक्षावाद तक" 64
—डॉ० अमृत लाल

11. हिन्दी साहित्य में काव्य कला का उद्देश्य 71
—डॉ० अलका मोहन शर्मा

12. ईरानी और भारतीय कला का बेजोड़ नमूना "हुमायूँ का मकबरा" 74
—डॉ० नाजिमा इरफान

13. भारतीय मूर्ति शिल्प में आधुनिक काल 81
—श्रीमति आँचल सिंह

14. वैश्विक कला में वस्तुनिरपेक्षता के कलात्मक स्वरूप का अध्ययन 89
—डॉ० हेमन्त कुमार राय एवं गगन कुमार

15. छापाचित्रकला में लिथोग्राफी एक महत्वपूर्ण प्रयोग 95
—रजनीष गौतम

16. आधुनिक छापाकला के परिप्रेक्ष्य में भारतीय कला 100
—सचिन केसरवानी

17. भारतीय एवं वैश्विक लोक कलाओं का रचनात्मक कला-प्रवाह 106
—डॉ० गीता राणा एवं रुचि मलिक

18. "कला का नया किरदार-संगीतात्मक चिकित्सा" 111
—वरूण राणा

19. भारतीय एवं वैश्विक लोक कलाओं का रचनात्मक कला-प्रवाह 115
—आशुतोष कुमार सोनिया

20. वैश्विक मंच पर भारतीय आधुनिक कला का योगदान 120
—डॉ० प्रीतिका वर्मा

21. 'लोक कला के सन्दर्भ में योगी के चित्रों की समीक्षा' 124
—डॉ० सत्या सिंह

22. "Drawing is one of the basic component of visual arts from the perspective of Osten Biennale of Drawing – Macedonia" 139
—Ankur Kumar

भारतीय मूर्ति शिल्प में आधुनिक काल

श्रीमति आँचल सिंह*

आधुनिक कला आधुनिक मानव की कला है जो आधुनिक समय और आधुनिक परिवेश में हुए परिवर्तनों की उपज है। आधुनिक जीवन जितना जटिल है उतना ही जटिल आधुनिक कला। आधुनिकता का संबंध नवीनता से हैं । आधुनिकता का प्राचीनता से कोई संबंध नहीं होता है, यह अपने नवीन मानदंडों पर स्थापित होती है और उसी पर चलती है। आज समाज में ज्यादातर लोग इसे अपनाते हैं पर इनमें से कुछ ऐसे भी होते हैं जो प्राचीन विचारधारा को ही लेकर चलते हैं।

आधुनिक कला को आज एक विश्वव्यापी रूप प्राप्त हुआ है उसका मुख्य कारण है "आधुनिक समाज और आधुनिक जीवन दर्शन"। जीवन के दार्शनिक मूल्यों में परिवर्तन होना प्रारंभ हुआ तो उसका जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था जिसका कला के क्षेत्र पर भी प्रभाव पड़ा। 19वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही जब परंपरागत सामाजिक व धार्मिक निष्ठाऐं टूटने लगी थी तब कलाकार का व्यक्तित्व भी ब्राहय बंधनों से मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से सृजन करने को उधत हुआ और वह राज्याश्रय व धार्मिक बंधनों से मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से कला को निर्मित करने लगा। अतः आधुनिक समाज की कला का स्वरूप भी आधुनिक हो गया।

भारतीय कला का एक गौरवमय इतिहास रहा है। अजंता, जैन, राजपूत व पहाड़ी कला शैलियों के गरिमापूर्ण इतिहास वाली इस देश में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रभाव से ही परिवर्तन आने प्रारंभ हुए थे। भारतीय चित्रकला के मौलिक रूप में मुगल कला से ही विदेशी तत्वों का प्रवेश प्रारंभ हो गया था। जब ईरानी व राजपूत शैलियों का सम्मिश्रण हुआ और जहांगीर के शासनकाल में मुख्यतः मुगल कला का काफी प्रचार रहा परंतु राज्यों व दरबारी लोगों का व्यक्ति चित्रण के प्रति अभिरूचि बढ़ी व दरबार में यूरोपीय व्यापारियों व यात्रियों के आगमन से धीरे-धीरे कला के मूल सौंदर्य में ह्रास आना प्रारंभ हुआ। परिणाम स्वरूप यूरोपीय कला के यर्थाथवादी स्वरूप का भारतीय कला पर प्रभाव पड़ा और उसका दार्शनिक आदर्शवादी स्वरूप विकृत होने लगा।

औरंगजेब के शासनकाल में कलाकारों

* प्रवक्ता, चित्रकला विभाग, आई०एन० पी०जी० कालिज, मेरठ

Dr Mamta Singh with Dr Kavita Garg

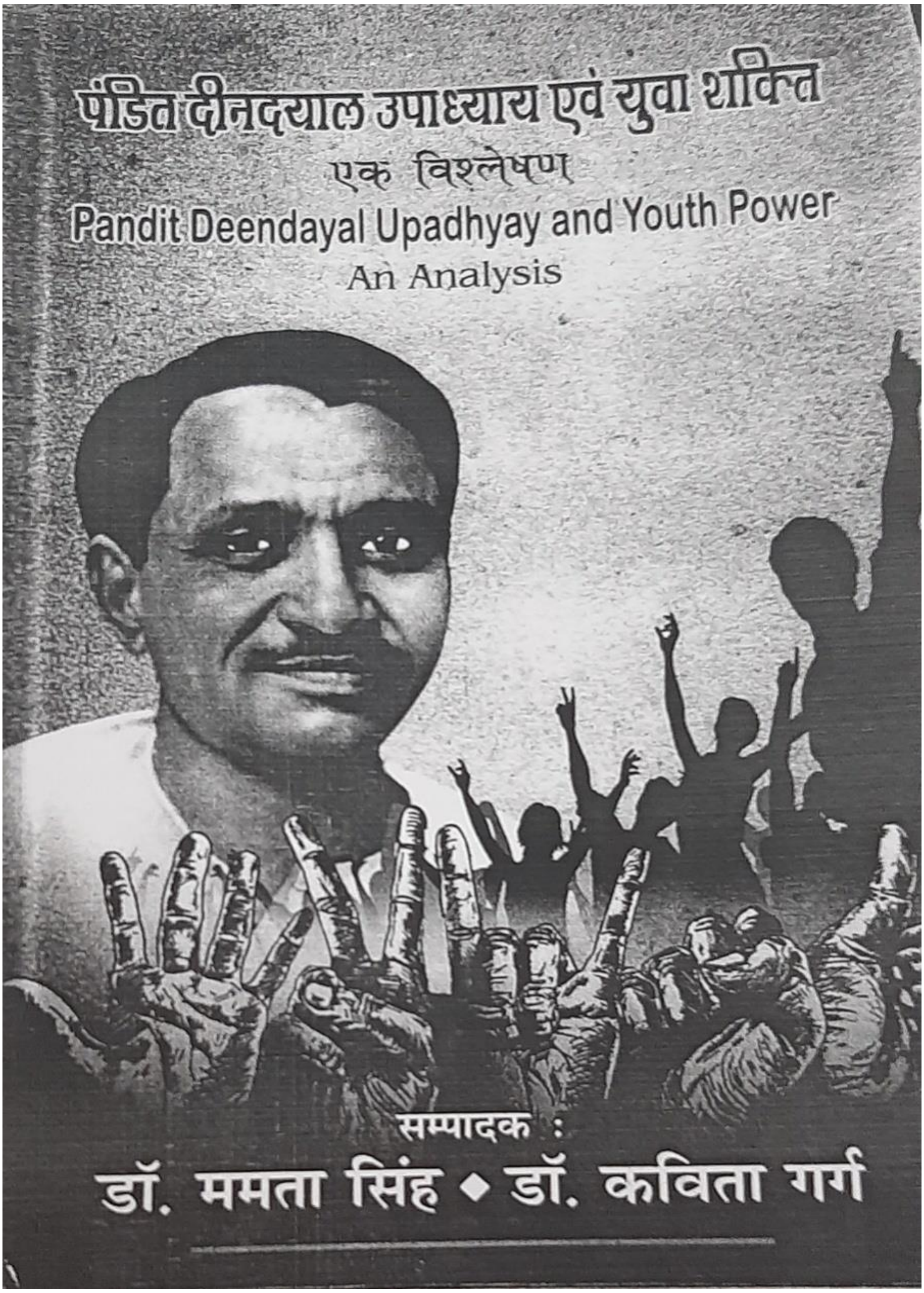

N.B. PUBLICATIONS
SF-1 A-5/3 D.L.F, Ankur Vihar
Loni Ghaziabad-201102, U.P. (India)
Phones: 8700829963,9999829572
E-mail: *nbpublications26@gmail.com*

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं युवा शक्तिः एक विश्लेषण

Pandit Deendayal Upadhyay and Youth Power: An Analysis

प्रथम संस्करण—2020

© सम्पादिका

ISBN : 978-93-89234-09-1

वितरक कुनाल बुक्स
4648/21, 1st फ्लोर, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
फोन: 011-23275069, मो. : 9811043697, 9868071411
E-mail: kunalbooks@gmail.com, **Website :** www.kunalbooks.com

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटो कॉपी एवं रिकार्डिंग, इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनः प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Published in India by N.B Publications, and printed at **Trident Enterprises**, New Delhi.

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं युवा शक्तिः एक विश्लेषण

Pandit Deendayal Upadhyay and Youth Power: An Analysis

डॉ. ममता सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा,
अर्थशास्त्र विभाग एवं
निदेशिका गांधी अध्ययन केन्द्र
इस्माईल नेशनल महिला पी0जी0 कॉलिज, मेरठ

डॉ. कविता गर्ग

असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
इस्माईल नेशनल महिला पी0जी0 कॉलिज, मेरठ

N.B. PUBLICATIONS
Ghaziabad - 201102. (India)

विषय-सूची

आभार v

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं युवा शक्तिः एक विश्लेषण

1. दीनदयाल चिंतन–युवा वर्ग का प्रेरणा स्त्रोत 1
   डॉ नीलिमा गुप्ता

1. वर्तमान समय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता 11
   डॉ ममता सिंह एवं डॉ. कविता गर्ग

3. पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक सच्चा राष्ट्रभक्त 23
   विशाल कुमार लोधी, मिस्बाह मुबिन एवं डॉ दीप्ती कौशिक

4. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का व्यक्ति दर्शन 31
   डॉ. नीना बत्रा एवं डॉ. गीता

5. पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के आर्थिक विचार–कृषि आय को बढ़ाना एवं वर्तमान सरकार द्वारा किसानों की आय को दोगुना करने का तुलनात्मक अध्ययन 37
   डॉ. अलका सूरी

6. शिक्षा के क्षेत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता 47
   डॉ. मीना कुमारी तोमर एवं डा. नीलम शर्मा

7. वर्तमान युवा शक्ति के निर्माण में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता 51
   डॉ. अनीता सिंह

2

वर्तमान समय में पंडित दीनदयाल उपाध्या के विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. ममता सिंह एवं डॉ. कविता*

प्रस्तावना

देश के युवा वर्ग में बढ़ता असंतोष राष्ट्र के लिए चिन्ता का वि इस असंतोष के अनेक कारक है। कुछ हमारे देश की वर्तमान परिरि इसके लिए उत्तरदायी है तो कुछ उत्तरदायित्व हमारी त्रुटियां नीतियों एवं दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति का भी है। अनियंत्रित रूप से जनसंख्या के फलस्वरूप उत्पन्न प्रतिस्पर्धा से युवा वर्ग में असंतोष की उत्पन्न होती है। जब युवाओं के हुनर का कोई राष्ट्र समुचित उपयो कर पाता है तब युवा असंतोष मुखर हो उठता है। इसे समाप्त करने आवश्यक है कि हमारे राजनीतिज्ञ व प्रमुख पदाधिकारीगण निजी स ऊपर उठकर देश के विकास की ओर ध्यान केंद्रित करें एवं सुदृढ़ लागू करें, क्योंकि किसी भी राष्ट्र अथवा देश के नवयुवक उस र विकास एवं निर्माण की आधारशिला होते है। स्वस्थ नवयुवक ही स्वस का निर्माण कर सकते है।

विलक्षण बुद्धि, सरल व्यक्तित्व एवं नेतृत्व के अनगिनत गुणों के पं० दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म 25 सितम्बर 1916 में हुआ हत्या सिर्फ 52 वर्ष की आयु में 11 फरवरी 1968 को मुगलसराय

* असिस्टेंट प्रोफेसर, एवं अर्थशास्त्र विभागाध्यक्षा, आई० एन० (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ
** असिस्टेंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र), आई० एन० (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ (उ०प्र०)।

Dr Babita Sharma

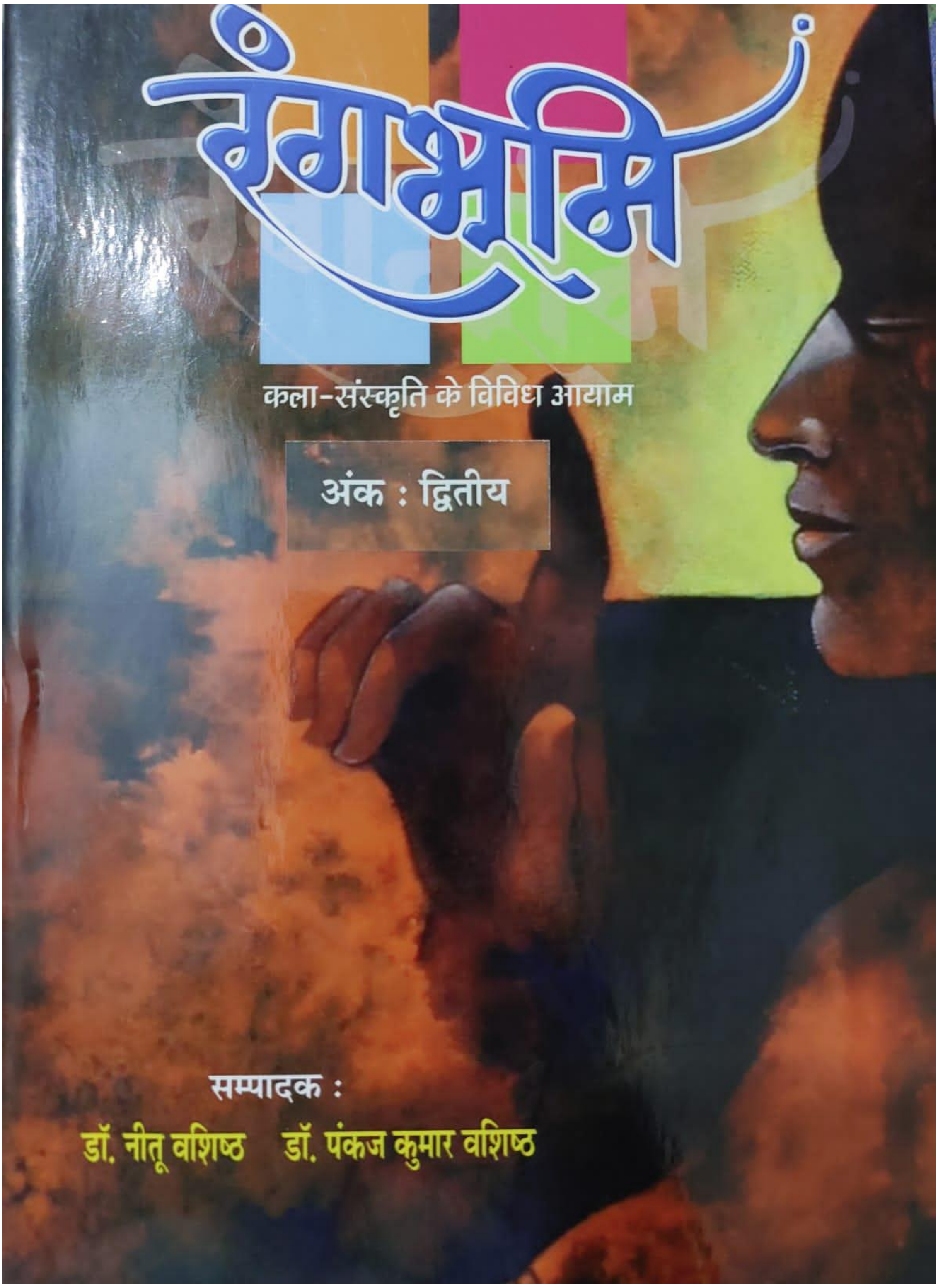

सम्पादक मण्डल
डॉ. नीतू वशिष्ठ
प्रधान सम्पादक
डॉ. पंकज कुमार वशिष्ठ
प्रधान सम्पादक
डॉ. रूचिन शर्मा
उप-सम्पादक
डॉ. विनोद सिंह
सह-सम्पादक
अंक : प्रथम
रंगभूमि
कला-संस्कृति के विविध आयाम
सम्पादक :
डॉ0 पंकज कुमार वशिष्ठ
मूल्य : ₹ 1100.00
ISBN: 978-93-89043-60-0
satyam
सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
एन-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
चलभाष : +91-7042082850, 9899665801
ई-मेल : satyampub_2006@yahoo.com

ISBN : 978-93-89043-60-0

© सुरक्षित

प्रथम संस्करण : 2020

इस पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों, लेखों में व्यक्त विचार एवं तथ्य लेखकों के हैं, उससे प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है और उसके लिए प्रकाशक या सम्पादक किसी भी रूप में ज़िम्मेदार नहीं है।

लेखक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक :
आर० डी० पाण्डेय
सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
N-3/25, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
फोन : +91-7042082850

मूल्य : 1100.00

टाईप सेटिंग : **एस० के० ग्राफिक्स**, दिल्ली-84

मुद्रक : **विशाल कौशिक प्रिन्टर्स**, दिल्ली-93

23. भारतीय समकालीन लिथोग्राफी छापाचित्र कला 144
—गायत्री सिंह

24. आधुनिक छापाकला के परिप्रेक्ष्य में भारतीय कलाकारों का समावेश 149
—डॉ० रनिका

25. आधुनिक भारत की छापाचित्र कला-समकालीन कला के परिप्रेक्ष्य में 156
—डॉ० बबिता शर्मा

26. समकालीन मूर्तिकला में महिला कलाकारो की भूमिका 162
—श्रीमती प्रज्ञा केसरवानी

27. आधुनिक छापा कला के परिप्रेक्ष्य में भारतीय कला 169
—आरती शर्मा

28. चित्रकार चोयल की कला परम्परा 172
—ज्योति सिंह

29. लोक-शैली से प्रभावित आधुनिक भारतीय चित्रकार 175
—डॉ० विशाल यादव

30. ''लोक कलाओं का रचनात्मक कला-प्रवाह'' 178
—डॉ० अमिता शुक्ला

31. कला, धर्म और नैतिकता 183
—डॉ० महिमा

32. बाबरी मस्जिद का इतिहास 190
—डॉ० ममता रानी

33. धर्म एक संस्कृति से ओत-प्रोत राजस्थान 192
—विनीता गुप्ता

34. सूर्य प्रतिमाओं के मूर्त रूपांकन 202
—रेनुका रानी

35. अकबर का चित्रकला के प्रति प्रेम 205
—कंचन देवी

36. प्राचीन भारतीय कला के हस्तलिपि चित्र 208
—नाज़िया नफीस

2C

आधुनिक भारत की छापाचित्र कला-समकालीन कला के परिप्रेक्ष्य में

डॉ० बबिता श

समकालीन कला एक प्रयोगधर्मिता का दृश्य है। यह सभी अर्थों में सहअस्तित्व को जीते हुए अपने दायरों को विकसित करना ही है। आज का कलाकार किसी एक तकनीक में बँधकर सृजन नहीं करता, वह नित-नवीन प्रयोगों की खोज करता रहता है। छापाकला भी प्रतिलिपियों की खोज का एक परिणाम है। पुरातन विद्या को नवीन तरीके से प्रस्तुत करना ही नई तकनीक के अन्तर्गत आता है। दृश्य कला के क्षेत्र में छापा कला का चित्रकला से सर्वथा भिन्न अपना ही एक अलग स्थान है। आज छापाचित्र कला एक सर्वव्यापी भाषा बन गई है, जो बहुत ही सरल और हृदयस्पर्शी एवं अपने सीमित रंगों और नवीनतम तकनीकी सीमाओं के कारण अपना अलग प्रभाव पैदा करती है। ''महान चित्रकार डयूरर ने छापा कला को यर्थाथ से कल्पना लोक तक अभिव्यक्त करने का माध्यम माना है। विश्व के महान कलाकार रेम्ब्रा, डयूरर, गोया और पिकासो जैसे कलाकारों ने छापा कला के माध्यम से अभिव्यक्ति की है।''

छापा कला को अंग्रेजी भाषा में 'ग्राफिक आर्ट' के नाम से जानते हैं, वहीं ग्रीक भाषा में इसे ग्राफिकोष तथा लैटिन भाषा में ग्राफिकुस के नाम से जाना जाता है। ग्राफी शब्द के साथ अनेकों शब्द जुड़े हैं जैसे-लिनोग्राफी, लिथोग्राफ फोटोग्राफी व सैरोग्राफी आदि इन सभी माध्य द्वारा अक्षर, चिन्ह, आकृति ड्राइंग आदि छापा या लिखा जाता है।[1]

पश्चिम में परिपक्व हुई छापाचित्र कल का आगमन भारतीय आधुनिक चित्रकला के विकास के लिये एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रहा है। इसने भारतीय चित्रकला को एक नवीन पद्धति दी जो कला के विकास में अग्रणी मानी जाती है। भारत में छापा-चित्रकला तकनीक का प्रयोग आदि मानव द्वारा निर्मित सिन्धु घाटी की कला, संस्कृति तथा कंडाकोट के समीप की गुफाओं में दृष्टिगत होता है। अन्तर्राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में इस कला का विस्तृत और व्यापक स्वरूप हमें दक्षिणी फ्रांस और उत्तरी स्पेन में देखने को मिलता है जो तत्कालीन छापाचित्रकारों की सूक्ष्म अनुभूति का विवेकपूर्ण प्रदर्शन है और कलात्मकता के साथ-साथ गर्भित भी है।[2] सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिपेक्ष्य ने कलाकार को इस कला के प्रति आकर्षित किया और इस कला शैली का प्रचलन धीरे-धीरे विकास की ओर अग्रसर हुआ।

तकनीक व माध्यम की दृष्टि से छाप

* असि० प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, इस्माईल नेशनल महिला पी०जी० कॉलिज, मेरठ

Dr Ranika

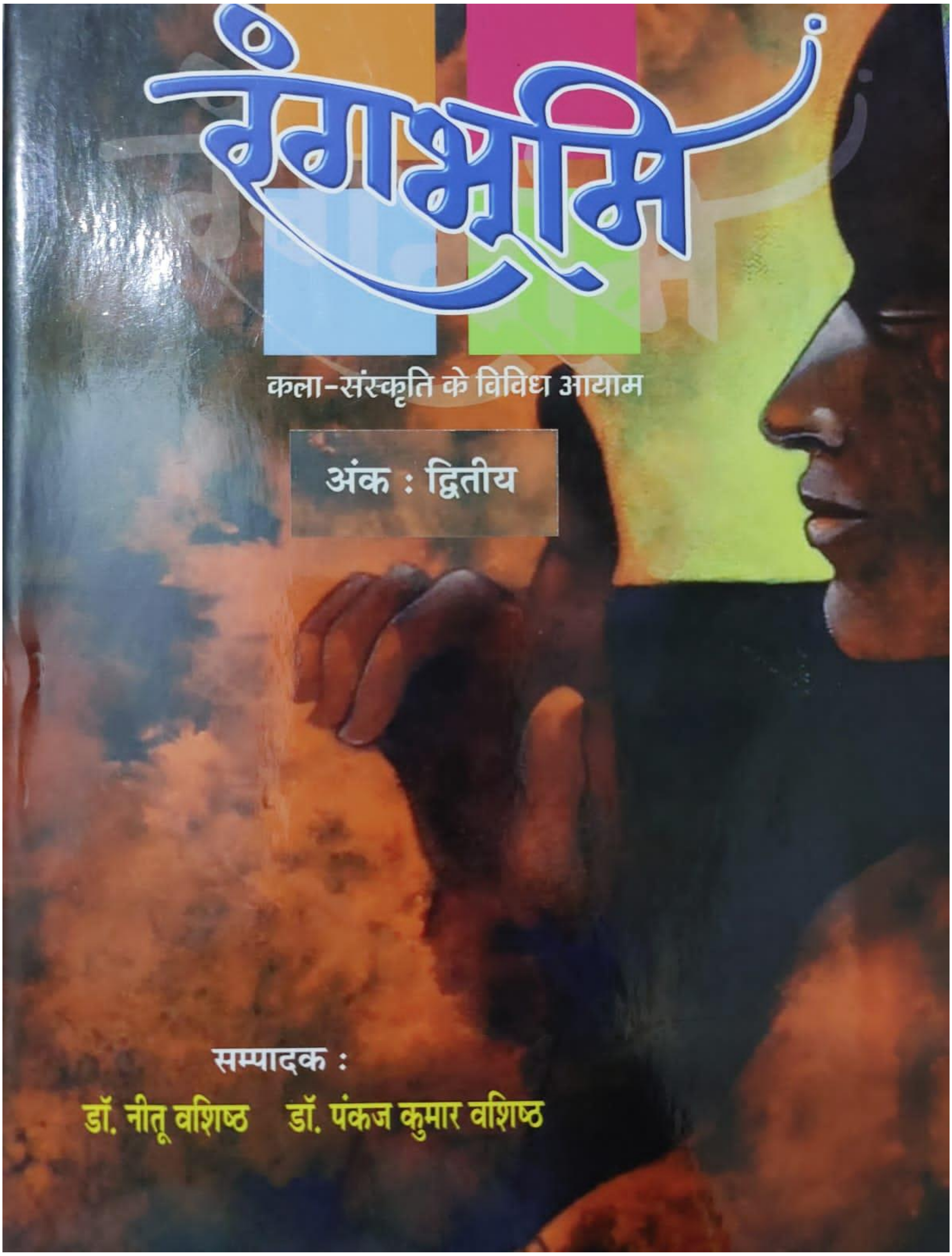

सम्पादक मण्डल

डॉ. नीतू वशिष्ठ
प्रधान सम्पादक

डॉ. पंकज कुमार वशिष्ठ
प्रधान सम्पादक

डॉ. रूचिन शर्मा
उप-सम्पादक

डॉ. विनोद सिंह
सह-सम्पादक

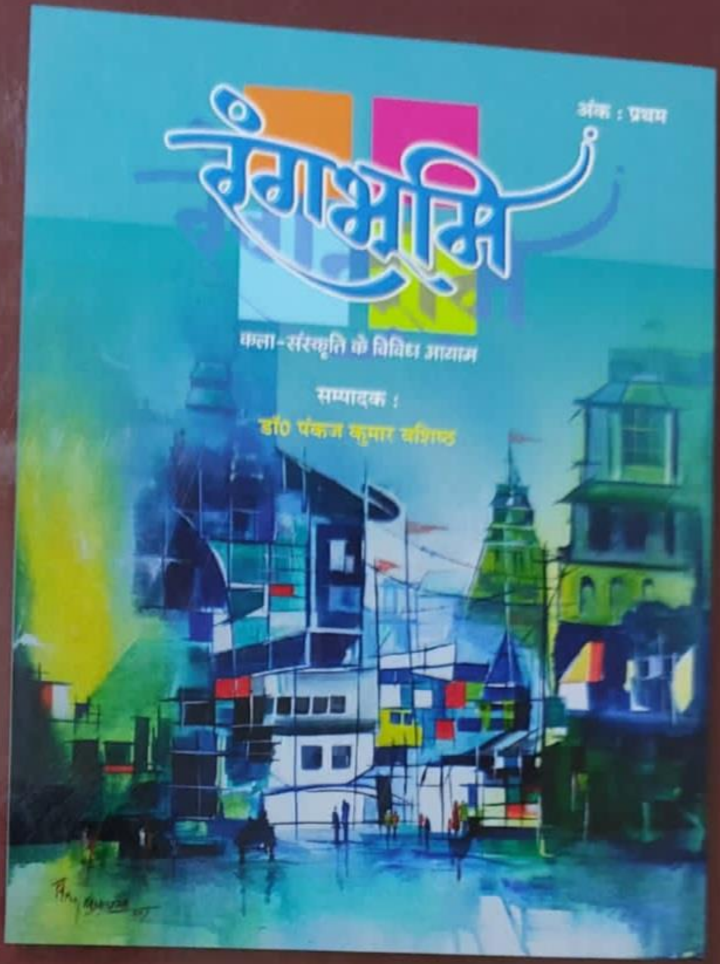

मूल्य : ₹ 1100.00
ISBN: 978-93-89043-60-0

सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
एन-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
चलभाष : +91-7042082850, 9899665801
ई-मेल : satyampub_2006@yahoo.com

ISBN : 978-93-89043-60-0

© सुरक्षित

प्रथम संस्करण : 2020

इस पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों, लेखों में व्यक्त विचार एवं तथ्य लेखकों के हैं, उससे प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है और उसके लिए प्रकाशक या सम्पादक किसी भी रूप में ज़िम्मेदार नहीं है।

लेखक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक :
आर० डी० पाण्डेय
सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
N-3/25, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
फोन : +91-7042082850

मूल्य : 1100.00

टाईप सेटिंग : **एस० के० ग्राफिक्स**, दिल्ली-84

मुद्रक : **विशाल कौशिक प्रिन्टर्स**, दिल्ली-93

23. भारतीय समकालीन लिथोग्राफी छापाचित्र कला — 144
—गायत्री सिंह

24. आधुनिक छापाकला के परिप्रेक्ष्य में भारतीय कलाकारों का समावेश — 149
—डॉ० रनिका

25. आधुनिक भारत की छापाचित्र कला-समकालीन कला के परिप्रेक्ष्य में — 156
—डॉ० बबिता शर्मा

26. समकालीन मूर्तिकला में महिला कलाकारो की भूमिका — 162
—श्रीमती प्रज्ञा केसरवानी

27. आधुनिक छापा कला के परिप्रेक्ष्य में भारतीय कला — 169
—आरती शर्मा

28. चित्रकार चोयल की कला परम्परा — 172
—ज्योति सिंह

29. लोक-शैली से प्रभावित आधुनिक भारतीय चित्रकार — 175
—डॉ० विशाल यादव

30. "लोक कलाओं का रचनात्मक कला-प्रवाह" — 178
—डॉ० अमिता शुक्ला

31. कला, धर्म और नैतिकता — 183
—डॉ० महिमा

32. बाबरी मस्जिद का इतिहास — 190
—डॉ० ममता रानी

33. धर्म एक संस्कृति से ओत-प्रोत राजस्थान — 192
—विनीता गुप्ता

34. सूर्य प्रतिमाओं के मूर्त रूपांकन — 202
—रेनुका रानी

35. अकबर का चित्रकला के प्रति प्रेम — 205
—कंचन देवी

36. प्राचीन भारतीय कला के हस्तलिपि चित्र — 208
—नाज़िया नफीस

आधुनिक छापाकला के परिप्रेक्ष्य में भारतीय कलाकारों का समावेश

डॉ० रनिका*

भारत में छापाचित्र कला तकनीक का प्रयोग आदि-काल से हो रहा है। आदि मानव द्वारा निर्मित छापा चित्रकला के आरम्भिक चित्र सिन्धु घाटी काल की कला संस्कृति तथा कंडाकोट के समीप की गुफाओं में स्पष्ट दृष्टिगत होते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में इस कला का विस्तृत और व्यापक स्वरूप हमें दक्षिणी फ्रांस और उत्तरी स्पेन में देखने को मिलता है। पूर्ण प्रदर्शन है और कलात्मकता के साथ-साथ सारगर्भित भी है सामाजिक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य ने कलाकार को इस कला के प्रति आकर्षित किया और इस कला शैली का प्रचलन धीरे-धीरे विकास की ओर अग्रसर हुआ। छापाचित्र कला की इस विधा को ''भारतीय छापाचित्र कला आदि से आधुनिक काल तक'' पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया जो अभी तक जनसाधारण के लिये लगभग अनजान है।[1] सन् 1964 से पहले हर छपे हुए चित्र, व्यावसायिक और गैर-व्यावसायिक प्रयोजन के लिये प्रकाशित को, 'ग्राफिक आर्ट' कह दिया जाता था। लेकिन जैसे-जैसे इसकी जरूरत बदली तथा इस कला का विकास हुआ तो इन दोनों में अंतर करना अनिवार्य हो गया।[2] प्रिंट काउंसिल ऑफ अमेरिका ने 1964 में मौलिक छापाचित्र (प्रिंट) को परिभाषित किया और छापा चित्रण (प्रिंट मेकिंग) को धीरे-धीरे इसी के अनुकूल स्वीकृति मिलने लगी।

भारत में 1556 से पहले, कागज पर मशीनी मुद्रण के कोई प्रमाण नहीं मिलते, जब गोआ में पुर्तगाली जेसुइट मिशनरी आकर बसे थे। सोलहवीं शताब्दी के मध्य से तथा अठारहवीं शताब्दी के अंत तक बंबई एवं मद्रास में मुद्रण गतिविधियों में तेजी आई। पुर्तगालियों ने जहाँ मशीनी पुस्तक मुद्रण शुरू किया तो वही अंग्रेजों ने 18वीं शताब्दी के अंत में चित्र तथा पुस्तक चित्रण (इलैस्ट्रेशन) की शुरूआत की। भारत में छापा-चित्रण बड़े पैमाने पर शुरू किया जा सकता है अथवा नहीं, इस संभावना की पहली बार खोज विलियन डेनियल तथा थाँमय डेनियल ने ही की। सन् 1786 से 1788 के दौरान इन्होंने विलियम के रेखांकनों पर आधारित एक एल्बम प्रकाशित किया[3], जिसमें बारह मौलिक एचिंग्स शामिल थीं और इसका शीर्षक रखा टवेल्व न्यूज ऑफ कलकत्ता। इससे अन्य विदेशी कलाकारों में भी इस कला को लेकर दिलचस्पी पैदा हुई और उन्होंने एचिंग व एन्ग्रेविंग तकनीकों

* असि० प्रोफेसर चित्रकला विभाग, इस्माईल नेशनल महिला पी०जी० कॉलिज, मेरठ